कोरोना का दंश : ईद भी नहीं मन पाई

शिवपुर जिले की सीमाएं सील कर दी गईं ।अन्य प्रदेशों से जिले में प्रवेश कर रहे लोगों को पुलिस ने कठोरतापूर्वक रोकना शुरू कर दिया ।इस जिले में रहने वाले और पैदल आने वाले ग्रामीणों की पहले चेक पोस्ट पर स्क्रीनिंग की जाती ,बाद में संबंधित थाने पर सूचना देकर उन्हें होम क्वारंटाइन किया जाता ।स्थानीय स्तर पर संक्रमण के लिए गिने-चुने प्रकरण मिलने से प्रशासन निश्चिंत था ।बाहर से आने वालों पर यथासंभव ऊपर जानकारी भेजने लायक निगरानी रखी जा रही थी। जिले से तीन प्रदेशों की सीमाएं सटी हुई थीं इसलिए समस्या तीन गुना बढ़ गई थी ।अनुमति प्राप्त वाहनों के अतिरिक्त खाद्यान्न संबंधी वाहनों को ही जिले में आने जाने दिया जा रहा था ।कई बार वाहनों की पकड़ और फिर उन्हें छोड़ने के किस्से भी अखबारों के माध्यम से सामने आ रहे थे ।कई थानों पर पैसे लेकर छोड़ने के आरोप भी लगाए जा रहे थे।

प्रदेश से बाहर काम की तलाश में गये मजदूर व अन्य लोग जब वहां भूखों मरने लगे तब उन्हें अपने घर की याद आने लगी। शिवपुर में रोजगार की व्यवस्था न होने से यहां के मजदूर देशभर में फैले हुए थे।खेती किसानी, भवन निर्माण ,सड़क निर्माण ,स्ट्रीट वेंडर से लेकर कुछ अन्य छोटे मोटे धंधों में ये लगे हुए थे।रेल एवं बस जैसे सुलभ साधन बंद होने से वे अपने घर लौटने की चिंता में डूब गये।

उनके पास साधन और पैसे दोनों का अभाव था।कुछ कोरोना की परवाह किए बिना चालीस से लेकर साठ तक की संख्या में ,अपने गंतव्य तक ट्रकों में बैठकर आने लगे।लोग समूह बनाकर आँटो रिक्शा से ही चल दिए।कुछ ने साइकिलों से ही यात्रा शुरू कर दी।उन्होंने हवा भरने का पंप ,रेडीमेड पंचर जोड़ने की पटटी, सब्जी और खाने का सामान क्रय करना उचित समझा।उन्हें सरकारों से सहायता की कोई उम्मीद नहीं थी।

दूसरे राज्यों में फंसे हुए मजदूर प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने घर लौटना चाहते थे। परदेश में भूखों मरने से अच्छी अपनी जन्म भूमि ही थी!? कुछ लोग बंद मिक्सर और टैंकरों में बैठकर भी यात्रा करने का दु:स्साहस कर रहे थे।एक बॉर्डर पर जांच के दौरान एक टैंकर में बीस लोग बैठे हुए मिले।इसी प्रकार एक मिक्सर से बारह लोग बाहर निकाले गए।कुछ मजदूर हाथ ठेलों पर ही अपनी गृहस्थी और बीवी बच्चों को लेकर निकल पड़े।महाराष्ट्र की ओर से आने वालों की तो जैसे बाढ़ आ गई।ट्रकों में मजदूर भेड़ बकरियों की तरह भरे जा रहे थे।थकान होने पर उन्हें इधर-उधर फिलने या हाथ पांव फैलाने की भी जगह नहीं थी।कुछ ट्रकों में धूप से बचने के लिए तिरपाल लगा था तो कुछ पूरी तरह खुले हुए थे।कुछ ट्रक वालों ने बीच में लकड़ी के फट्टों का पार्टीशन लगाकर सवारी बिठाने की व्यवस्था दुगनी कर ली थी। यदि रास्ते में किसी की तबीयत खराब होती तो वे उसे वहीं उतार कर आगे बढ़ जाते।मानवीयता और संवेदनाएं तार तार हो रही थीं। हाईवे पर दिन रात चलने वाले ट्रकों में से कुछ के पलट जाने की खबरें भी आने लगीं।उनमें बैठे मजदूरों के साथ अप्रत्याशित घटनाएं घटित होने लगीं।हर दिन एक नई घटना किसी न किसी प्रदेश में हो रही थी।इन्हें संबंधित राज्य सरकार द्वारा दस बीस हजार की मदद देकर निपटा दिया जाता ताकि हंगामा न हो।गरीब आदमी का परिवार भी इतनी रकम से खुश हो जाता क्योंकि इतनी मोटी रकम भी उसने अपने जीवन में कभी देखी न थी।घायलों को शासकीय अस्पतालों में भर्ती कर पांच हजार रुपये पकड़ा दिए जाते।पड़ोसी जिले में ड्राइवर की झपकी लग जाने के कारण एक ट्रक व बस में भिड़ंत हो गई।दुर्घटना में ग्यारह श्रमिकों की मौत हो गई।हादसा रात तीन बजे के आसपास हुआ था।ट्रक मजदूरों से भरा हुआ था और उसमें लगभग पैंसठ मजदूर थे।पुलिस ने ड्राइवर के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया किंतु मजदूरों की सुध किसी ने न ली।

एक अन्य दुर्घटना में शिवपुर से दस किलोमीटर दूर नेशनल हाईवे पर मारवाड़ की ओर जा रही एक पिकअप गाड़ी पलट गई।उसमें मौजूद सभी छब्बीस मजदूर घायल हो गए।इनमें से सात मजदूरों को गंभीर चोटें आई और उन्हें जिला चिकित्सालय में भर्ती कराना पड़ा।दुर्घटना का कारण तेज रफ्तार के कारण पिकअप का अनियंत्रित होना था।गाड़ी पलटते ही चीख-पुकार मच गई।आसपास के लोगों ने दौड़ कर उनकी सहायता की और पास के थाने पर फोन लगाकर पुलिस को सूचित किया।घायलों को वाहन से निकालकर इलाज के लिए जिला चिकित्सालय भेजा गया।शेष मजदूर रोते कलपते वहीं सड़क किनारे बैठ गए।बाद में पुलिस वालों ने अपनी ओर से उनकी भोजन व्यवस्था की और उधर से निकलने वाले ट्रकों में बिठा कर वहां से रवाना किया।

दो दिन पहले भी भरी दोपहरी में शिवपुर से पन्द्रह किलोमीटर पहले नेशनल हाईवे पर एक बस पलट गई थी।उसमें पचास की जगह अस्सी सवारियां भरी थीं।बस से ऊपर छोटे-छोटे बच्चे भी थे।खबर मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायलों को निकलवाया और चिकित्सालय तक पहुंचाया ।बस में सभी मजदूर और उनके परिवार के लोग थे जो निकटवर्ती एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश की ओर जा रहे थे। घटना बस के टायर फटने से हुई थी।गरीब मजदूरों के पास खाने की व्यवस्था भी नहीं थी।ऐसी स्थिति में शहर के यातायात प्रभारी ने अपने परिचितों को फोन कर उनकी भोजन व्यवस्था की कराई।इसके बाद भी उन्हें ले जाने के लिए दूसरे वाहन की व्यवस्था नहीं हो पा रही थी।कुछ समाजसेवियों की मदद से उन्हें गंतव्य तक पहुंचाया गया।

बहुत से मजदूर सड़क पर चलकर पुलिस के डंडे खाने और रास्ता भटकने के डर से रेल की पटरी के सहारे चल रहे थे।इनके पास किसी वाहन से यात्रा करने के लिए पर्याप्त पैसे नहीं थे और न कोई भोजन व्यवस्था।ऐसे में सोलह यात्रियों का एक समूह दूसरे प्रदेश से अपने गृह प्रदेश में आने के लिए रेल की पटरियों के सहारे पैदल चला।रात होते ही थकान के कारण वहीं पर सो गया।एक मालगाड़ी ने उन सोते हुए मजदूरों को देर रात मौत की नींद सुला दिया।दूसरे दिन यह खबर मीडिया की सुर्खी बन गई।उनके शवों के पास बिखरी हुई सूखी रोटियां उनकी जीवन गाथा कह रही थीं।जब ये दीपक सदा के लिए बुझ गए तब उन्हें उनके गांव तक पहुंचाने की व्यवस्था बन पाई।मृतक श्रमिकों को उनके जीवन के मुआवजे के रूप में पांच पांच लाख रुपये उनके परिजनों को देने की घोषणा हुई।राजनीति और साहित्य दोनों में मृत्यु के बाद ही संवेदना सोच की सतह पर सामने आती है।ऐसा क्यों ? शिवपुर बाईपास भी इसी प्रतिदिन सात आठ हजार मजदूर निकल रहे थे।ये लोग राम के देश में एक हजार किलोमीटर की यात्रा पर राम का नाम लेकर चल पड़े थे।प्रति पग सड़क नापते,उंगली थामे छोटे-छोटे बच्चों के साथ सैकड़ों लोग शरणार्थी जैसे भटक रहे थे।कुछ जगह इन लोगों को भोजन या चाय नाश्ता मिल जाता था ।जब दो तीन दिन के भूखे बच्चों के हाथों में पूड़ी सब्जी आती तब उनकी आंखों की चमक प्रदीप्त हो उठती।

कहीं कहीं प्रदेश सरकारों के असामंजस्य के कारण अंतर्राज्यीय सीमा पर वाहनों को रोका जा रहा था जिससे हंगामे की स्थिति भी बनने लगी थी।कहीं मजदूरों ने सड़क पर धरना दिया और कहीं कहीं उत्तेजनावश पथराव भी किया।जब बात कुछ छोटे छोटे निरंकुश मीडिया चैनलों से प्रसारित होने लगी तो राष्ट्रीय मीडिया को भी नाटक करना पड़ा।शीर्ष अधिकारियों तक यह बात पहुंची तब कहीं जाकर उन्होंने अनुमति वाले व्यक्तियों ,वाहनों को अपने क्षेत्र से दूसरे राज्य की सीमा में जाने की अनुमति दी।लेकिन यह व्यवस्था बनने तक कई मजदूर चैबीस से अड़तालीस घंटे तक सीमा पर भूखे प्यासे फंसे रहे ।शासन - प्रशासन की ओर से इनकी कोई व्यवस्था नहीं की गई।

कुछ राज्य सरकारों ने अपने प्रदेश के मजदूरों को अन्य प्रदेशों से वापस बुलाने के प्रयास भी किए। किंतु मजदूरों की बड़ी संख्या को देखते हुए यह प्रयास ऊंट के मुंह में जीरे के समान ही रहे।कहीं-कहीं शासन की व्यवस्था होने के बाद भी बस ऑपरेटरों ने मजदूरों से अच्छी खासी रकम ऐंठी।राज्य शासन के आंकड़ों के अनुसार एक लाख मजदूर आ चुके थे और डेढ़ लाख मजदूर आने के लिए इंतजार कर रहे थे।जबकि वास्तव में इनकी संख्या 16 लाख से अधिक थी।लौटने वाले मजदूरों को काम देना भी एक बड़ी समस्या बन गई थी।लौट कर आये हुए मजदूरों का भी यही कहना था कि यदि अपने राज्य में ही काम मिल जाए तो हजारों किलोमीटर दूर दूसरे शहरों में क्यों रहना पड़े ?यह्हां अगर काम नहीं मिला तो लाकडाउन के बाद फिर से जाना उनकी मजबूरी होगी।परिवार के भरण पोषण का प्रश्न जो है। देश में कोरोना तेजी से पांव पसारने लगा था।लौटने वाले मजदूरों से भी संक्रमण फैलने का भय था। प्रदेश में कई लोग लॉक डाउन के कारण अन्य जिलों में फंसे हुए थे।इनके लिए शासन की ओर से ई पास की व्यवस्था की गई।इसमें भी कोरोना की भांति लेनदेन घुस गया।ईद का त्यौहार सर पर था।मुस्लिम

धर्मावलंबी अपने घर आना चाहते थे।टैक्सी चालकों ने भी इस अवसर पर लोगों की विवशता को समझ उनसे मनमाना भाड़ा लिया। आपदा को अवसर में बदलना कोई हमसे सीखे ?मुगलों के समय से आदत सी पड़ गई है।अंततः कोरोना वायरस की महामारी की चपेट में ईद का त्योहार भी आ ही गया।शासन के स्पष्ट व सख्त निर्देश थे कि मस्जिद में पांच से अधिक व्यक्ति नमाज नहीं पढ़ेंगे।ईद की नमाज लोग अपने ही घर में पढ़ें।मुस्लिम धर्मगुरुओं ने सार्वजनिक अपील कर लोगों को घर पर ही नमाज पढ़ने के तौर तरीके बता दिये।इस कारण इस बार लोग मस्जिदों या सड़कों पर एक दूसरे से गले लग कर ईद की मुबारकबाद देते हुए कहीं नहीं दिखे।आखिरी जुमे के दिन भी मस्जिदों से लेकर बाजारों तक सन्नाटा पसरा रहा।खरीदारी के लिए उमड़ने वाली भीड़ न होने से दुकानदार भी मायूस हुए। जहां हजारों लोग मौजूद रहते थे वहां इक्का-दुक्का ही दिखाई दे रहे थे।ईद पर सभी ने सोशल डिस्टेंसिंग के साथ एक दूसरे को ईद की बधाइयां दीं।ज्यादातर लोगों ने सोशल मीडिया का उपयोग करना ही बेहतर समझा।यह उनके जीवन की पहली अनोखी ईद थी जिसमें वे ईदी के लिए भी कहीं न जा सके।

▶ डॉ.महेन्द्र अग्रवाल
स. नई ग्रजल
सदर बाजार शिवपुरी म.प्र.
473551
मो.9425766485

पुणे के नोबल हॉस्पिटल ने रचा इतिहास

सफलतापूर्वक रोबोटिक लेफ्ट एट्रियल मिक्सोमा एक्सिशन प्रक्रिया की

- महाराष्ट्र में पहली बार हुई इस प्रकार की रोबोटिक हार्ट सर्जरी
- देश में भी अपनी तरह की दूसरी प्रक्रिया बनी

हडपसर के नोबल हॉस्पिटल्स एंड रिसर्च सेंटर ने कार्डियक केयर में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। अस्पताल ने सफलतापूर्वक रोबोटिक लेफ्ट एट्रियल मिक्सोमा एक्सिशन किया — यह दिल के जटिल ट्यूमर को हटाने की सर्जरी है, जिसे पूरी तरह सर्जिकल रोबोट की मदद से छोटे की होल पोर्ट्स के जरिए किया गया। यह प्रक्रिया पुणे में की गई पहली रोबोटिक हार्ट सर्जरी, महाराष्ट्र की पहली और देश में अपनी तरह की केवल दूसरी सर्जरी है। 55 वर्षीय महिला मरीज के दिल के एक चैम्बर में नियमित जांच के दौरान गैर-कैंसरयुक्त ट्यूमर पाया गया। लेफ्ट एट्रियल मिक्सोमा भले ही कैंसर न हो, लेकिन लक्षण वाले मरीजों में यह स्ट्रोक या गंभीर सांस फूलने जैसी समस्या पैदा कर सकता है। इसका एकमात्र पक्का इलाज सर्जरी के जरिए इसे हटाना ही है।

आमतौर पर इस प्रक्रिया के लिए मीडियन स्टर्नोटॉमी करनी पड़ती है, जिसमें दिल तक पहुंचने के लिए छाती की हड्डी को बीच से काटकर खोला जाता है। लेकिन नोबल हॉस्पिटल्स में यही ऑपरेशन कुछ छोटे पोर्ट कट्स के जरिए किया गया, न बड़ा चीरा लगाया गया और न ही छाती की हड्डी काटी गई। मरीज को हार्ट-लंग मशीन पर रखने और दिल को अस्थायी रूप से रोकने के बाद, सर्जिकल टीम ने हाई-डेफिनिशन 3डी विजन की मदद से लेफ्ट एट्रियम तक पहुंच बनाई, दिल की दीवार से ट्यूमर को बेहद सटीक तरीके से हटाया और रोबोट की सहायता से 10 गुना ज्यादा सटीकता के साथ उस हिस्से की सिलाई की।

रोबोटिक कार्डियक सर्जरी से मरीजों को कई बड़े फायदे मिलते हैं, ऑपरेशन के बाद दर्द काफी कम होता है, रिकवरी तेजी से होती है, अस्पताल में कम समय रुकना पड़ता है, खून कम बहता है और लंबे छाती के निशान की जगह केवल छोटे पोर्ट के निशान रह जाते हैं।

इस ऐतिहासिक सर्जरी का नेतृत्व सीनियर कार्डियक सर्जन डॉ. धैर्यशील कणसे ने किया। उन्हें सीनियर ऑन्कोसर्जन डॉ. आशीष पोखरकर का सहयोग मिला। सर्जिकल टीम में डॉ. अनिरुद्ध ढेकणे और डॉ. एन. जाधव शामिल थे। एनेस्थीसिया की जिम्मेदारी डॉ. सम्राट मदनाइक और डॉ. पर्मिता दीक्षित ने संभाली, जबकि हार्ट-लंग मशीन का संचालन श्री शशिकांत काले ने किया।

यह सफलता रोबोटिक कार्डियक प्रक्रियाओं के एक बड़े दायरे का रास्ता खोलती है। डॉक्टरों का मानना है कि जल्द ही इसी तकनीक का इस्तेमाल रोबोटिक एएसडी क्लोज़र, रोबोटिक वाल्व रिप्लेसमेंट और रोबोटिक-असिस्टेड बायपास सर्जरी में भी किया जाएगा, जिससे एडवांस कार्डियक केयर कम जटिल, ज़्यादा सटीक और दुनियाभर के मरीजों के लिए कहीं अधिक सुलभ बन सकेगी।

इस उपलब्धि पर बात करते हुए डॉ. कणसे ने कहा, 'यह हार्ट सर्जरी के नए दौर की सिर्फ शुरुआत है, एक ऐसा दौर, जिसमें मरीजों को कम से कम तकलीफ के साथ विश्वस्तरीय इलाज मिल सकेगा। '

इस उपलब्धि पर बात करते हुए नोबल हॉस्पिटल्स के डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. दिविज माने ने कहा, 'आज पुणे ने नेक्स्ट-जनरेशन कार्डियक केयर के वैश्विक मानचित्र पर अपनी जगह बना ली है। हमारी टीम ने यह साबित किया है कि दुनिया की सबसे एडवांस रोबोटिक कार्डियक सर्जरी, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के सर्जन और इस क्षेत्र की अत्याधुनिक तकनीक के साथ किया जाता है, अब यहीं संभव है। इसके नतीजे दुनिया के बेहतरीन सेंटरों के बराबर हैं। उत्कृष्ट इलाज के लिए मरीजों को दूसरे देशों में जाने की जरूरत नहीं होनी चाहिए; हमारी कोशिश है कि हम वही बेहतरीन सुविधा उनके पास लेकर आएं। यह उपलब्धि हमारे इरादों का संदेश है। हम लगातार मेडिकल साइंस की सीमाओं को आगे बढ़ाते रहेंगे, तकनीक और विशेषज्ञता में निवेश करते रहेंगे और मरीज-केंद्रित तथा बेहतर परिणाम देने वाली कार्डियक केयर के नए मानक तय करेंगे, उनका सिर्फ पालन नहीं करेंगे। आने वाले समय में दुनिया एडवांस हार्ट सर्जरी के लिए पुणे की ओर देखेगी और हम इस बदलाव का नेतृत्व करने का इरादा रखते हैं।

बेटी का ब्याह

पूर्णिमा बिटिया तो बड़ी हो गई कुछ सोचा भी है कि नहीं उसके ब्याह के लिए क्या बताऊं ऊषा अब तो ब्याह के नाम से ही डर लगने लगा है ये तो तुम ने बिल्कुल ठीक कहा पुर्णिमा आजकल जो घटनाएं घट रही है ?। उससे मन बड़ा व्याकुल रहता है किस पे भरोसा करें और कैसे हम अपने कलेजे के टुकड़े को किसी के भी हाथों में सौंप दें ।।

ये हमारे समाज की बड़ी विकट समस्या है लोग कहते हैं हम उन्नति कर रहे हैं । पर सोच तो वहीं की वहीं पड़ी हुई है । पहले भी बहू बेटियों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता था और अब भी वही किया जाता है तो फिर हम ने उन्नति कहा कि ..??

बेटी को मरने से बचाने के लिए हमें कोई ठोस कदम उठाना होगा ।। अगर हम अपनी बेटियों का ब्याह ही ना करें तो ... कैसी बातें करती हो उषा ये तो प्रकृति के विरुद्ध होगा। हां मगर जो अत्याचार ये लोग कर रहे हैं उसका क्या??

जानवर इंसान स्त्री पुरुष जब जिसको जहां मौका मिल रहा है । एक दूसरे को झपट ले रहे हैं । मौत के घाट उतार दे रहे हैं। ये केवल बेटियों के साथ ही नहीं बल्कि अब तो बेटों के साथ भी होने लगा है । मालूम नहीं दुनिया कहां जा रहा है ।

लोग समझ नहीं रहे हैं पति पत्नी का रिश्ता मालिक और नौकर का नहीं बल्कि साझेदारी भागेदारी का होता है?। दोनों एक दूसरे के पूरक है । पति पत्नी जीवन रुपी गाड़ी के वो पहिए हैं जिन पे पूरा जीवन टीका होता है।

तुम्हें पता है कोई भी लड़की ये सोच कर अपने ससुराल नहीं जाती है कि वो वहां जाते ही नौकरानी की पदवी संभाल लेगी । सुबह चार बजे उठ कर झाड़ू पोंछा बर्तन कपड़े चाय नाश्ता दोपहर का भोजन शाम की चाय फिर रात का खाना सब संभाल लेगी । सास के आगे पीछे घूमेगी पति की जी हुजूरी करेगी और जब सांस कहें तब बच्चा जनने के लिए तैयार रहेगी ।। एक जीती जागती पढ़ी लिखी आत्मनिर्भर लड़की जो अपनी मर्जी से जीती चली आ रही है। अपने फैसले खुद ले रही है। माता पिता भाई बहन सब ने हमेशा उसके फैसले को सर आंखों पे धरा है। रातों रात उसकी दुनिया बदल जाती है।?जिसे कल तक वो अपना घर कह रही थी आज उसके लिए वो पराया? हो जाता है। एक अजनबी जिसे कल तक वो जानती तक नहीं थी आज उस पे उस अजनबी का अधिकार हो जाता है। उसे ये सब समझने के लिए मौका तक नहीं दिया जाता है। वो कुछ समझे इससे पहले उसके शरीर पे कब्जा कर लिया जाता है ।वो अपने मन में अपने इस नये घर परिवार को बिठा सके इससे पहले? उसे जिम्मेदारियों के बोझ तले दबा दिया जाता है। उसे फूर्सत ही नहीं मिलती है कुछ भी सोचने समझने के लिए

मानो वो कोई निर्जीव वस्तु हो या फिर कोई बेजुबान जानवर..!

सदियों से हमारे समाज में यही तो होता आ रहा है। पहले हजारों का मामला था फिर लाख और अब तो करोड़ भी कम पड़ रहा है । पहले भी दहेज के नाम पे? बेटिया जला दी जाती थी अब भी जला लटका दी जाती है ।। लड़की एक अलग सपने लेकर आती है अपने पिता के घर से अपने पिया के घर और घरवाले कुछ अलग ही सोच कर रख रहते हैं ।

नया घर परिवार रिश्ता और रिश्तेदारों को समझने का मौका ही नहीं देते हैं । बस झोंक देते हैं भट्ठी में ईंट की तरह मालूम नहीं किसका स्वभाव कैसा है..? फिर भी पेश कर देते हैं हर किसी के आगे । कभी भी कोई भी पुरुष किसी भी स्त्री को समझने का प्रयत्न ही नहीं करते है?। बस उस पे अपनी मर्जी थोपना जानते हैं। ऐसा लगता है जैसे रिश्ते नहीं निभा रहे बल्कि अपनी आपसी दुश्मनी निकाल रहे हो ।।

▶ किरण काजल बेंगलुरु

दहेज बनी मौत

दहेज एक ऐसी बिमारी है जो एक बाप को कर्ज से ले डुबती है, और बेटी को भी हमेशा दु:ख का भोगी होना पड़ता है। हमारा समाज आज शादी की मांग में एक बाप के कर्ज से अपनी बेटी को सौंपता है, जहां समाज वालों का कहना है की शादी धूमधाम से नहीं की तो तुम छोटे हो जाओगे,या तुम गरीब हो, यदि ये सब समाज तय कर रहा है तो क्यों एक बाप कर्ज लेकर शादी करता है, क्यों हम दिखावा करते हैं,नयी-नयी परांपरा हम बना रहें हैं ,जिनका कोई महत्व नहीं है, और शादी में 2-4 दिन की तारीफ के लिए 5-7 लाख खर्च कर देते हैं, यदि आपके पास पैसे हैं तो खर्च करें पर दूसरों लोगों की होड़ में कर्ज की बलि न चढ़े, शादी तो हो जाएगी पर वो कर्ज की नींद आपको चैन से नहीं सोने देगी '

और लड़कियों से निवेदन है की आप यदि समझदार है तो जरा सोचिए की आपके पिता इतने पैसों का कर्ज लेकर क्या सो पाएंगे,आप किसी लड़की को देखकर न सोचें की उसकी शादी धूमधाम से हुई हम भी करेंगे, निवेदन है ऐसा सोचना बंद करें,यदि आप समझदार है तो अपने पिता की पगड़ी का ध्यान रखें वो कर्ज और किसे के हाथ जोड़ने पर निर्भर न रहें।

रही बात की लड़के वाले नहीं मानेंगे वो धूमधाम से करना चाहते हैं तो मैं आपको एक बात बता दूं,जो रिश्ता प्रेम से बंधा है वो आपकी बातों में सहमत होगा ,ये दिखावा,धूमधाम,की जगह साधारण शादी के लिए हां करेगा। 'होड़ करना बंद करों, कर्ज लेकर शादी न करों, रिश्तों में विश्वास बंधकर, बेटी को विदा करों ' हमें निम्न कदम उठाने चाहिए!

युवाओं का संकल्प:-सबसे बड़ा बदलाव युवाओं को खुद में लाना होगा। लड़कों को कसम खानी होगी कि वे अपनी शादी में एक रुपया भी दहेज नहीं लेंगे। उन्हें अपने माता-पिता के सामने खड़े होकर कहना होगा, 'मैं बिकाऊ नहीं हूँ। 'बेटियों को आत्मनिर्भर बनानाः

माता-पिता को बेटी की शादी के लिए पैसे जोड़ने के बजाय उसकी उच्च शिक्षा पर खर्च करना चाहिए। एक आत्मनिर्भर लड़की अपने अधिकारों के लिए लड़ सकती है।दिखावे पर रोकः समाज को सामूहिक रूप से फिजूलखर्ची और शादियों में उपहारों के प्रदर्शन का बहिष्कार करना चाहिए। शादियां सादगी से होनी चाहिए।सामाजिक बहिष्कारः जो परिवार दहेज की मांग करते हैं, समाज को उनका सम्मान करना बंद कर देना चाहिए। जब तक ऐसे लोगों को सामाजिक रूप से शर्मिंदगी का अहसास नहीं होगा, वे नहीं सुधरेंगे।निष्कर्षः

सोच बदलने का समय आ गया है।बेटे को पढ़ा-लिखाकर काबिल बनाना हर माता-पिता का कर्तव्य है। लेकिन उस काबिलियत का इस्तेमाल शादी के बाजार में ऊंची कीमत वसूलने के लिए करना इंसानियत का अपमान है। जब आप दहेज लेते हैं, तो आप अपने बेटे का गौरव और उसका आत्मसम्मान हमेशा के लिए बेच देते हैं। वह एक जीवनसाथी नहीं लाता, बल्कि एक बिकाऊ वस्तु बन जाता है।अब समय आ गया है कि हम अपनी सोच को बदलें। बेटियों को बोझ समझना बंद करें और बेटों की सरेआम नीलामी रोकें। शादी को दो परिवारों का सम्मानजनक मिलन रहने दें, इसे व्यापारिक सौदा न बनाएं। तभी हम एक सच्चे, नागरिक का निर्माण करें

▶ नीतू नागर (धाकड़):)
सोशल वर्कर/नारी शक्ति
संगठन संस्थापिका